लेख

मधुबनी पेंटिंग में 'मोर'

मधुबनी-मिथिला पेंटिंग
औरतों की एक खूबसूरत और चटकीली पहचान

अनुपमा झा

'किलकारी', पटना के विभिन्न बाल केंद्र बिहार सरकार के माध्यमिक स्कूलों के बच्चों के साथ काम करते हैं। अवसर, जानकारी और कुछ कर पाने के आत्मविश्वास के उन तक न पहुंच पाने के कारण इन स्कूलों में पढ़ने वाले अधिकतर बच्चे बहुत तरह की सम्भावनाओं से दूर रह जाते हैं। *किलकारी*, पटना ने इन संभावनाओं को खोज पाने का जज़्बा बच्चों में विकसित करने के लिए कला की विभिन्न विधाओं को माध्यम बनाया है। पटना ज़िले के दस केंद्रों पर बिहार का जो रंग सबसे खिला हुआ, बिखरा हुआ नज़र आता है वह है, मधुबनी/मिथिला पेंटिंग।

इस कला के चटख रंग और लुभावनी कलाकृति ने लड़के-लड़कियों को जैसे अपनी चाह को खूबसूरत तरीक़े से बयान करने का एक माध्यम दे दिया था। बच्चों को यह खूबसूरत उड़ान देने का काम किया है शिवानी रंजन ने। मधुबनी ज़िले के राजनगर, सिमरी की निवासी शिवानी इस विधा को अपनी खानदानी धरोहर मानती हैं। बचपन में मां और दादी के संसर्ग ने इस कला से इनका परिचय कराया और आज वह खुद तक़रीबन 700 बच्चों को इस कला से जोड़ चुकी हैं। पटना में रहने वाली, तीन बच्चों की मां और मध्यम वर्ग की सदस्या शिवानी अपनी इस कला के ज़रिये खुद की पहचान बनाने के साथ-साथ अपने परिवार को आर्थिक रूप से सम्पन्न की चाह के साथ आगे बढ़ रही हैं।

शिवानी की मां सुधा देवी भी बचपन से मिथिला पेंटिंग को कागज़ और कपड़े पर उतारा करती थीं, परन्तु उनकी यह कला घर के अन्दर तक ही सीमित रहती थी। शादी के बाद उनकी सास ने अपनी कला को घर से बाहर लाने के लिए प्रोत्साहित किया। आज सुधा देवी की रचना देश-विदेश में पसंद की जाती है। उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। सुधा देवी की पेंटिंग जापान में बहुत पसंद की गई। उनकी कलाकृति ने आज जापान के स्कूल की किताबों में भी अपनी जगह बना ली है। शिवानी ने घर की अन्य लड़कियों की तरह अपना ताल्लुक इस कला से बचपन से ही जोड़ लिया था, परन्तु मैट्रिक पास करने के बाद अपने इस हुनर की मदद से अपनी पहचान बनाना शुरू किया। साड़ी, दुप्पटों आदि पर तरह-तरह के

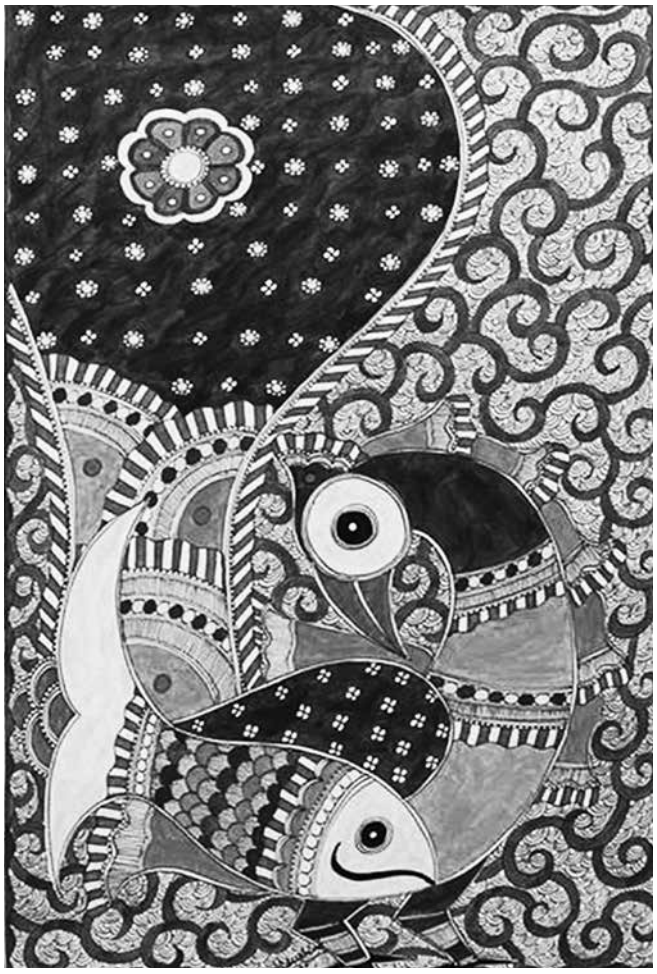

श्याम-श्वेत मधुबनी पेंटिंग

विधि-विधान और पौराणिक कहानियों का चित्रण करना शुरू कर दिया। इन साड़ियों और कपड़ों को बाज़ार में ले जाने का काम इनके चाचा करते हैं। दिल्ली हाट, पटना और दूसरी जगह लगाने वाले उद्योग मेलें में इनका स्टॉल हुआ करता है। इनके हर कदम पर इनकी मां इनके साथ होती हैं। शिवानी अपने इस हुनर को दूसरों तक भी पहुंचाने की इच्छा रखती है और इस इच्छा ने उन्हें *किलकारी* से जोड़ा है।

शिवानी इस कला को, जो ख़ास कर मिथिला की महिलाओं की धरोहर है, अपने खून में रचा बसा पाती हैं। मिथिला की यह कला, जिसका सीधा सरोकार मिथिला की संस्कृति से है, ने यहां की औरतों को भारत और विदेश के बाज़ार से सीधे तौर पर जोड़ दिया है। मिथिलांचल के घरों के अन्दर सिमटी यह कला पहली बार 1934 के भूकम्प के बाद दुनिया के सामने आयी थी। घरों की दीवारों और फर्श पर चित्रित इस कला को देख विलियम जी. आरकर (जो बाद में लन्दन के विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय में दक्षिण एशिया के संग्राध्यक्ष हुए) दंग रह गए थे। इन्डियन आर्ट जर्नल के 1949 में प्रकाशित हुए एक लेख ने मिथिला की महिलाओं के इस हुनर को विश्व के सामने लाकर रख दिया। खूबसूरत, चटकीले रंगों के इस्तेमाल कर बने ये चित्र इतने मनमोहक थे कि 1960 में फैले सूखे के दौरान अखिल भारतीय हस्तकला परिषद ने मिथिला की कुछ उच्च जाति की महिलाओं को अपने इस हुनर को कागज़ और कपड़ों पर उतारने के लिए प्रोत्साहित किया और फिर महिलाओं ने अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में अपनी जगह बना ली।

मिथिला के छोटे से भाग में घर के अन्दर की दुनिया मे सिमटी रहने वाली इन महिलाओं के इस हुनर ने जो सिर्फ़ शादी, उपनयन संस्कार जैसे पवित्र रीति-रिवाजों के समय अपने घर को सजाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था, भारत की संस्कृति और पौराणिक कहानियों को बहुत खूबसूरत तरीक़े से पूरे विश्व के सामने ले कर आया। कहा जाता है कि मिथिला के राजा जनक ने अपनी पुत्री सीता के विवाह के समय पूरी मिथिला को इस खूबसूरत चित्रकला से सजाया था। राम-सीता के विवाह की कहानी, राधा-कृष्ण के प्रेम, हिन्दू देवी देवताओं और रीति-रिवाज को दर्शाने वाली यह कला आज भारत की संस्कृति, दर्शाने के साथ-साथ हर व्यक्ति को अपनी कल्पना को बड़े ही मनमोहक अंदाज़ में दिखाने का मौका देती है।

मानवीय रूप के अलावा मधुबनी चित्रकला में जो डिज़ाइन और आकृति महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण करते हैं— वह हैं पक्षियों में मोर, तोता, जानवर में मछली, शेर, कछुआ, सांप, हाथी,फूल में कमल, पान, पुरनिया की पत्तियों के

मछली और फूल

'चिड़िया' मधुबनी पेंटिंग

साथ छोटे-छोटे गोले और तिरछी लकीरें। इन सारी आकृतियों और डिज़ाइन को सम्पन्नता और शांति का प्रतीक माना जाता है। मछली किसी काम के शुभ शुरूआत का प्रतीक तो है ही साथ ही वह पानी को भी दर्शाने का काम करती है। हर आकृति के चारों तरफ खींची गयी दोहरी लाइन के बीच का स्थान रंगों से नहीं बल्कि तिरछी रेखाओं से भरा जाता है जिसे 'कचनी' कहते हैं।

महिलाओं को अपने काम को अंजाम देने के लिए हमेशा सीमित संसाधनों पर निर्भर रहना पड़ता है। मिथिला की महिलायें प्राकृतिक संसाधन की मदद से ही अपनी कल्पना को रूप देती हैं। ब्रश की जगह माचिस की तीलियों, बांस की टहनी और प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल इन अनपढ़ महिलाओं का इन संसाधनों से उनके गहरे परिचय को सामने लाता है। काले रंग के लिए चूल्हे या चिमनी की कालिख को गाय के गोबर से मिलाया जाता है, हल्दी और पराग कण से पीला रंग, नील से नीला, कुसुम या जवा फूल के रस या लाल चन्दन से लाल, सेम या सेब के पत्ते से हरा, जामुन से जामनी, चावल के आंटे से सफ़ेद और पलाश के फूल से नारंगी रंग बनाया जाता है। हालांकि बाज़ार से जुड़ने के बाद इन महिलाओं को ब्रश और कृत्रिम रंग भी मिलने लगे हैं और वे इनका इस्तेमाल भी कर रही हैं, पर प्राकृतिक साधनों की समझ में कमी नहीं आई है।

दीवार, फर्श और बहुत से अन्य वस्तुओं पर चित्रित होने वाली महिलाओं की इस कला में जातीय समीकरण भी साफ़ नज़र आता है। इस कला पर पहले उच्च वर्ग का ही अधिकार माना जाता है। पर अब मिथिला की अधिकतर महिलाओं ने इसे अपनी धरोहर मान लिया है। साथ ही जाति के अनुसार विधा के विभिन्न रूपों का बंटवारा भी हो गया है। ब्राह्मण महिलायें देवी-देवताओं की कहानियों और कोहबर को चटकीले रंगों से किसी भी तरह के शेड के बिना सजाती हैं, वेद और धार्मिक ग्रंथ के श्लोक को चित्रित करने का अधिकार भी इन महिलाओं के पास है। जबकि कायस्थ महिलायें अपने क्षेत्र के रीति-रिवाज को खूबसूरती से लाइन की मदद से बिना किसी चटकीले रंग से दर्शाती हैं, ये श्वेत-श्याम चित्र जिसमें शेडिंग का अपना कमाल नज़र आता है काफी मनमोहक होते हैं। शिवानी की कृतियों में यह बंटवारा साफ़ नज़र आता है। उनकी पेंटिंग में मधुश्रावनी, उपनयन और शादी की रीत, महिलाओं के पर्व, और बिसहरी जैसी मिथिला की कहानियां नज़र आती है, कृष्ण-राधा और राम-सीता की कहानियां तो जैसे इस चित्रकला का हृदय है। बच्चों के साथ काम करते समय चटकीले रंग का इस्तेमाल तो होता है, परन्तु उनकी पसंद है श्वेत-श्याम रंग। शिवानी कायस्थ परिवार की सदस्या हैं।

हरिजन महिलायें अपनी कृतियों में अपने रोज़मर्रा की ज़िन्दगी को इन लाइनों की मदद से दर्शाती हैं। चटकीले रंगों का इस्तेमाल इस वर्ग में भी कम ही होता है। घर, खेती-गृहस्थी से जुड़े हर पल से इन सीधे-सादे चित्रों के ज़रिये हम खुद को सीधे तौर पर जोड़ सकते हैं।

घरों के दीवारों में छुपी इस कला को भी उसकी ख़ासियत के आधार पर अलग-अलग नाम देकी पांच वर्गों में बांट दिया गया है— कांची, भरनी, तांत्रिक, गोड़ना और गोबर। कांची, भरनी और तांत्रिक चित्रकला ब्राह्मण और कायस्थ महिलाओं के अधिकार क्षेत्र में आते हैं जबकि गोड़ना और गोबर स्टाइल दलित और दुसाध महिलाओं की ख़ासियत मानी जाती है।

बिहार के मधुबनी ज़िले की यह खूबसूरत चित्रकला अब पूरे विश्व में फैल चुकी है, इस क्षेत्र की महिलाओं को इसने आर्थिक स्वतंत्रता के साथ आत्मविश्वास भी प्रदान किया है। यह कला अब हमारे सामने कागज़, कपड़ों के साथ-साथ टाइल्स, डगरा, सूप आदि पर भी नज़र आती है और चारों तरफ इन महिलाओं की खूबसूरत कल्पना को बिखेर देती है। हालांकि आज पुरुषों ने भी खुद को इस कला से जोड़ा है, परन्तु यह कला हमेशा मिथिला की महिलाओं की देन ही मानी जायेगी। इस पर पहला अधिकार इन महिलाओं का ही है।

अनुपमा झा *बिहार में बच्चों के साथ काम करती हैं।*